मासिक पत्रिका मार्च 2024

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

Maharishi Dayanand Saraswati Marg, B-31/C, Kailash Colony, New Delhi-110048

Tel.: 46678389, 9310140742 • E-mail: samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अरुण बहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

महर्षि दयानन्द एक क्रान्तिकारी महापुरुष

ऋषि दयानन्द का जन्म 1824 ई० में हुआ था। वे 1860 में गुरु विरजानन्द जी के पास विद्याध्ययन के लिए पहुँचे। उस समय उनकी आयु 36 वर्ष की थी। 1863 में उन्होंने अपने गुरु से दीक्षा ली और उनके पास से अध्ययन समाप्त कर जीवन-क्षेत्र में उतर पड़े। इस समय वे 39-40 वर्ष के हो चुके थे। विरजानन्द जी के पास उन्होंने जो कुछ सीखा वही उनकी वास्तविक शिक्षा थी क्योंकि इससे पहले वे जो-कुछ पढ़ आये थे उसे विरजानन्द जी ने भुला देने की उनसे प्रतिज्ञा ली थी। इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी की यथार्थ शिक्षा 1860 से 1863 तक-अर्थात् कुल तीन वर्ष ही हुई थी। उन्होंने पीछे चलकर अपने जीवन-काल में जितने व्याख्यान दिये, जितने ग्रन्थ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किए, वह तीन साल के अध्ययन का ही परिणाम था। इसी से स्पष्ट होता है कि इन तीन सालों में उन्होनें जो पाया था वह कितना मूल्यवान् था।

अपने गुरु विरजानन्द जी से ऋषि दयानन्द ने जो गुर पाया था वह आर्ष तथा अनार्ष ग्रन्थों में भेद करना था। 36 वर्ष की आयु से पहले उन्होंने जो-कुछ पढ़ा था वह अनार्ष ग्रन्थों का अध्ययन था। आर्षग्रन्थों के अध्ययन का उनका कुल समय तीन वर्षों का था। इन तीन वर्षों के अध्ययन ने उनके जीवन, उनकी विचारधारा में जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी उससे भारत के पिछले सौ वर्षों का इतिहास बन गया।

इस क्रान्ति का मूल-स्रोत उनका ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' है। सत्यार्थ-प्रकाश 1874 में लिखा गया। मुरादाबाद के राजा जयकृष्णदास जब काशी में डिप्टी कलेक्टर थे तब ऋषि दयानन्द काशी पधारे। राजा जयकृष्णदास ने ऋषि से कहा-आपके उपदेशामृत से वे ही व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं जो आपके व्याख्यान सुनते हैं। जिन्हें आपके व्याख्यान सुनने का अवसर नहीं मिलता उनके लिए अगर आप अपने विचारों को ग्रन्थ रूप में लिख दें, तो जनता का बड़ा उपकार हो। ग्रन्थ के छपने का भार राजा जयकृष्णदास ने अपने ऊपर ले लिया। यह आश्चर्य की बात है कि यह बृहत्काय तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ जिसे पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी ने 14 बार पढ़कर कहा कि हर बार के अध्ययन से उन्हें नया रत्न हाथ आता था, कुल साढ़े तीन महीनों में लिखा गया। जिन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश का गहराई से अध्ययन किया है उन्होंने पाया है कि इसमें 377 गन्थों का हवाला है। इस ग्रन्थ में 1542 वेद मन्त्रों या श्लोकों का उद्धरण दिया गया है। चारों वेद, सब ब्राह्मण ग्रन्थ, सब उपनिषद, छहों दर्शन, अठारह स्मृति, सब पुराण, सूत्र ग्रन्थ, गृह्य सूत्र, जैन-बौद्ध ग्रन्थ, बाइबल, कुरान-सबका उद्धरण ही नहीं, उनका उल्लेख भी दिया गया है। किस ग्रन्थ में, कौन-सा मन्त्र या श्लोक, या वाक्य कहाँ है, उसकी संख्या क्या है-यह सब-कुछ इस साढ़े तीन महीनों में लिखे ग्रन्थ में मिलता है आज का कोई रिसर्च स्कालर अगर किसी विश्वविद्यालय की संस्कृत के आधुनिक पुस्तकालय में, जहाँ सब ग्रन्थ उपलब्ध हों, इतने उल्लेख वाला कोई ग्रन्थ लिखना चाहे, तो भी उसे वर्षों लग जायें जिसे ऋषि दयानन्द ने साढ़े तीन महीनों में तैयार कर दिया था। साधारण ग्रन्थ की बात दूसरी है, सत्यार्थ-प्रकाश एक मौलिक विचारों का ग्रन्थ है, ऐसा ग्रन्थ जिसने समाज को एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिला दिया। जिन ग्रन्थों ने संसार को झकझोरा है उनके निर्माण में सालों लगे हैं। कार्ल मार्क्स ने 34 वर्ष इंग्लैण्ड में बैठकर 'कैपिटल'-ग्रन्थ लिखा था जिसने विश्व में नवीन आर्थिक दृष्टिकोण को जन्म दिया, किन्तु ऋषि दयानन्द ने

'सत्यार्थ प्रकाश' साढ़े तीन महीनों में लिखा था जिसने नवीन सामाजिक दृष्टिकोण को जन्म दिया। दोनों का क्षेत्र अलग-अलग था, मार्क्स के ग्रन्थ ने युरोप का आर्थिक ढाँचा हिला दिया, ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ ने भारत का सांस्कृतिक तथा सामाजिक ढाँचा हिला दिया।

सत्यार्थ प्रकाश चुने हुए क्रांतिकारी विचारों का ख़जाना है-ऐसे विचार जिन्हें उस युग में कोई सोच भी नहीं सकता था। समाज की रचना 'जन्म' के आधार पर न होकर 'कर्म' के आधार पर होनी चाहिए-सत्यार्थ प्रकाश का यही एक विचार इतना क्रांतिकारी है कि इसके क्रिया में आने से हमारी 90 प्रतिशत समस्याएँ हल हो जाती हैं। ऐसे संगठन में जन्म से न कोई नीचा, न कोई ऊँचा, न कोई जन्म से गरीब, न कोई अमीर, जो कुछ हो कर्म से हो-ऐसी स्थिति में कौन-सी समस्या है जो इस सूत्र से हल नहीं हो जाती। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का विचार सत्यार्थ- प्रकाश की ही देन है जिसे पकड़कर उत्तर-भारत में जगह-जगह गुरुकुलों का ताँता बिछ गया। आज भी हमारी शिक्षा-प्रणाली की जो छीछालेदर हो रही है उसका इलाज गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के सिद्धान्तों में ही निहित है। लोकमान्य तिलक ने कहा था-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। दादाभाई नौरोजी ने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया था। इन सबसे पहले ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के 8वें समुल्लास में लिखा था-'कोई कितना ही कहे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।' ऋषि दयानन्द के ये वाक्य उस जगत्-प्रसिद्ध अंग्रेज़ी वाक्य से जिसमें कहा गया था- "Good government is no substitute for self government" इतने मिलते-जुलते हैं कि 1874 में अंग्रेजों के राज्य में कोई व्यक्ति यह लिखने का साहस कर सकता हो-यह जानकर आश्चर्य होता है।

आज जिन समस्याओं को लेकर हम उलझे रहते हैं, हरिजनों की समस्या, स्त्रियों की समस्या, गरीबी की समस्या, शिक्षा की समस्या, देश-भाषा की समस्या, चुनाव की समस्या, नियम तथा व्यवस्था की समस्या, विनोबा भावे की गो-रक्षा की समस्या, नसबन्दी की समस्या, आचार की समस्या, नवयुवकों की समस्या-कौन सी समस्या है जिसका हल सत्यार्थ-प्रकाश में मौजूद नहीं है। और, कौन-सा हल है जो आज के राजनीतिज्ञों ने ऐसा ढूँढ निकाला है जो सत्यार्थ-प्रकाश में पहले से नहीं है।

हिन्दू-समाज में सबसे बड़ी समस्या वेदों की थी। यहाँ हर-कोई हर बात के लिए वेदों का नाम लेता था। स्त्रियों तथा शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार क्यों नहीं? क्योंकि वेदों में लिखा है-'**स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम्**' बाल-विवाह क्यों होना चाहिए? क्योंकि वेदों में लिखा है-'**अष्टवर्षा भवेत्गौरील नववर्षा च रोहिणी दश वर्षा भवत् कन्या तत् उध्वै रजस्वला। माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च, त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्याँ रजस्वलाम्।**' जन्म से वर्ण- व्यवस्था क्यों मानें? क्योंकि वेद में लिखा है-**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्**- ब्राह्मण परमात्मा के मुख से और शूद्र उसके पाँव से उत्पन्न हुए। जैसे मुख बाहू और बाहू मुख नहीं बन सकता इसी प्रकार ब्राह्मण शूद्र और शूद्र ब्राह्मण नहीं बन सकता। जब ऋषि दयानन्द ने यह देखा कि वेदों का नाम लेकर हर संस्कृत-वाक्य को वेद कहा जा रहा है, और वेदों का उद्धरण देकर वेद-मन्त्रों का अनर्थ किया जा रहा है, तब उन्होंने निश्चय कर लिया कि वेदों को ही केन्द्र बना कर हिन्दू-समाज की रक्षा की जा सकती है, और वह रक्षा तभी हो सकती है जब जन-साधारण को समझ पड़ जाए कि वेदों में कहा क्या कहा गया है। ऋषि दयानन्द ने वदों से वेदों पर प्रहार किया।

वैदिक वाङ्मय के संबंध में ऋषि दयानन्द की खोज यह थी कि हर संस्कृत-वाक्य तथा हर संस्कृत-ग्रंथ वेद नहीं हैं। ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद्, स्मृति, पुराण, सूत्र-ग्रंथ-ये सब वेद नहीं हैं। इन ग्रन्थों में जो-कुछ लिखा है वह अगर वेद-विरुद्ध है, तो वह त्याज्य है, जो वेदानुकूल है, वही ग्राह्य है। ऋषि दयानन्द का हिन्दू-समाज को कहना यह था कि अगर वेद को तुम अपनी संस्कृति का आधार मानते हो, तो इस पैमाने को लेकर चलना होगा, तुम जो चाहो वह वेद नहीं, वेद जो है वह मानना होगा। इस कसौटी पर कसने से हिन्दू-समाज की 90 प्रतिशत रूढ़ियाँ अपने- आप गिर जाती थीं। इस विचारधारा को प्रकट करने के लिए उन्होंने दो शब्दों का प्रयोग किया-'आर्षग्रन्थ' तथा 'अनार्ष ग्रन्थ'। अब तक संस्कृत-साहित्य में इस दृष्टि को किसी ने नहीं अपनाया था। संस्कृत के हर ग्रंथ में जो-कुछ लिखा मिलता था वह प्रामाणिक माना जाता था। ऋषि दयानन्द ने इस विचार को ठोकर मारकर गिरा दिया।

वेदों के संबंध में ऋषि दयानन्द की दूसरी खोज यह थी कि वेदों के शब्द रूढ़ि नहीं, यौगिक हैं। यद्यपि यह विचार नया नहीं

था, निरुक्तकार का यही कहना था, तो भी वेदों के सभी भाष्यकारों ने वैदिक शब्दों के रूढ़ि अर्थ ही किये थे। सायण, उब्वट, महीधर तथा उनके पीछे चलते हुए पाश्चात्य विद्वानों ने-मैक्समूलर, रॉथ, विल्सन, ग्रासमैन ने-मक्खी- पर -मक्खी मार अनुवाद किया था। सायण आदि एक तरफ़ वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे, दूसरी तरफ़ उनमें इतिहास भी मानते थे जो वेदों के ईश्वरीय-ज्ञान होने के सिद्धान्त से टकराता था। इस बात की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। असल में सायण का भाष्य किसी गंभीर विद्वत्ता से नहीं किया गया था, वह एक विशिष्ट लक्ष्य को सामने रखकर किया गया था। दक्षिण के विजयनगरम हिन्दू-राज्य के राजा हरिहर और बुक्का के वे मन्त्री थे। मुस्लिम संस्कृति राज्य में प्रतिष्ठित न हो जाय, इसलिए संस्कृत वाङ्मय का प्रसार करना मात्र इस भाष्य का उद्देश्य था। यही कारण है कि सायण के भाष्य गहराई तक नहीं गये और असंगत बातों के शिकार रहे। वह यज्ञों का समय था इसलिए भाष्यकार समझते थे कि वेदों के अग्नि, वायु, इन्द्र आदि देवता सचमुच स्वर्ग से यज्ञों में पधारते हैं और दान-दक्षिणा आदि लेकर तथा यजमान को आशीर्वाद देकर स्वर्ग चले जाते हैं। पाश्चात्य विद्वानों को यह बात अपनी विचारधारा के अनुकूल पड़ती थी। उनका विचार विकासवाद पर आश्रित था। आदि-मानव जंगली था, जंगली आदमी सूर्य को, अग्नि को, वायु को देवता समझकर पूजे तो यह युक्ति युक्त प्रतीत होता है। पाश्चात्य विद्वान् कहने लगे कि वैदिक ऋषि क्योंकि जंगली थे इसलिए अनेक देवताओं को पूजते थे। इस निष्कर्ष में सायण आदि के भाष्य उनके विचार की पुष्टि करते थे।

ऋषि दयानन्द ने इस विचार को भी ठोकर मारकर गिरा दिया। वेदों से ही उन्होंने सिद्ध किया कि अग्नि आदि नाम भिन्न-भिन्न देवताओं के नहीं, एक परमेश्वर के ही ये भिन्न-भिन्न नाम हैं। ऋग्वेद (१, १६४, ४६) में लिखा है-

'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति अग्निम् यमं मातरिश्वानमाहुः'

परमात्मा एक है, उसे अनेक नामों से स्मर्ण किया जाता है। इस एक मन्त्र से सारा-का-सारा विकासवाद, कम-से- कम जहाँ तक वेदों का सम्बन्ध है, ढह जाता है।

ऋषि दयानन्द का कहना था कि वैदिक शब्दों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं- आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक। उदाहरणार्थ, इन्द्र का आधिभौतिक अर्थ अग्नि, विद्युत, सूर्य आदि हैं; आधिदैविक अर्थ राजा, सेनापति, अध्यापक आदि दैवीय गुण वाले व्यक्ति हैं; आध्यात्मिक अर्थ जीवात्मा, परमात्मा आदि हैं। इसी प्रकार अन्य शब्दों के विषय में कहा जा सकता है। इस कसौटी को सामने रखकर अगर वेदों को समझा जाये, तो न उनमें इतिहास मिलता है, न बहुदेवतावाद मिलता है, न जंगलीपन मिलता है, न विकासवाद मिलता है।

वेदों के जितने भाष्यकार हुए हैं-इस देश के तथा विदेशों के-उनमें सबसे ऊँचा स्थान ऋषि दयानन्द का है। अगरवेदों को किसी ने समझा तो ऋषि दयानन्द ने।

इस युग के महायोगी श्री अरविन्द का कहना है कि "जहाँ तक वेदों का प्रश्न है दयानन्द सबसे पहला व्यक्ति था जिसने वेदों के अर्थों को समझने की असली कुंजी को खोज निकाला। वेदों का अर्थ समझने के लिए सदियों से जिस अन्धकार में हम रास्ता टटोल रहे थे उसमें दयानन्द की दृष्टि ही इस अन्धकार को भेद कर यथार्थ सत्य पर जा पहुँची थी।"

19वीं शताब्दी में भारत में अनेक समाज- सुधारक हुए। ऋषि दयानन्द, राजा राम मोहन राय, केशवचन्द्र सेन इसी युग की उपज थे। वे सब एक तरफ़ हिन्दू समाज के पिछड़ेपन को देख रहे थे, दूसरी तरफ़ पश्चिमी देशों की प्रगतिशीलता को देख रहे थे। यह सब देखकर वे हिन्दू समाज की रूढ़ियों को दासता से मुक्त करना चाहते थे। ऋषि दयानन्द तथा दूसरों की विचारधारा में भेद यह था कि जहाँ दूसरे हिन्दू-धर्म, हिन्दू-संस्कृति तथा हिन्दुत्व को ही समाप्त करने पर तुल गए, वहाँ ऋषि दयानन्द ने हिन्दुओं के हिन्दू रहते हुए उन्हें नवीनता के नये रंग में रंग दिया। कोई वृक्ष जड़ के बिना नहीं खड़ा रह सकता। जड़ कट जाय, तो वृक्ष जड़ के बिना नहीं खड़ा रह सकता। जड़ कट जाय, तो वृक्ष गिर जाता है। जड़ को मज़बूत बना कर जो वृक्ष उठता है वहीं टिका रहता है। कोई समाज अपने भूत के बिना नहीं जी सकता। भूत में पैर जमाकर भविष्य की तरफ़ बढ़ना-पीछे भी देखना, आगे भी देखना-यही किसी समाज के जीवन का गुर है। ऋषि दयानन्द ने इसी गुर को पकड़ा था। पीछे वेदों की तरफ़ देखो, उसमें जमकर आगे भविष्य की तरफ़ पग बढ़ाओ; भूत को छोड़ दोगे तो वृक्ष की जड़ कट जाएगी, भविष्य को नहीं देखोगे तो उठ नहीं सकोगे-यह ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश है, यही ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य का सन्देश है।

मार्च 2024 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
03	डॉ. देव कृष्ण दाश (9810764439)	कठोपनिषद् की व्याख्या।
10	आचार्य चन्द्रशेखर (9131563930)	महर्षि दयानन्द की आर्यसमाज से आकांक्षायें।
17	आचार्य वीरेन्द्र कुमार शास्त्री (9810507498)	पं. लेखराम जी का बलिदानी जीवन।
24	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	होली-नवस्येष्ठि का इतिहास व महत्त्व।
31	डॉ. आचार्य जयेन्द्र शास्त्री (9899349304)	राम नवमी-श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों कहते हैं?

फरवरी 2024 में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती आशा कम्पानी	5,000	श्री पदम मलिक	1,500	मास्टर ध्योम शर्मा /	1,100
श्री विजय प्रकाश सभरवाल	2,100	श्री योगेश मुंजाल	1,500	श्रीमती सविता शर्मा	
श्री कमल अरोड़ा	2,100	श्री अनिल बहल	1,500	श्री विजय मेहता	500
श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	1,500	श्री डी.के. अग्रवाल	1,000	श्री सुशील संतानी	500

नेत्र ऑपरेशन के लिए प्राप्त दान राशि:

- ❖ श्री कपिल सेठी ₹ 5,000/-
- ❖ श्रीमती मधु सेठी ₹ 5,000/-
- ❖ श्रीमती मंजु बहल ₹ 5,000/-
- ❖ श्रीमती माला बहल ₹ 5,000/-
- ❖ श्री नरेन्द्र कुमार वाधवा ₹ 3,100/-
- ❖ श्रीमती सरिता वाधवा ₹ 2,000/-

अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के लिए प्राप्त दान राशि :

- ❖ श्रीमती ऋचा लखनपाल ₹ 7,600/-
- ❖ श्रीमती मधु पोद्दार ₹ 10,000/-

अन्य दान : ❖ श्री आदित्य सेठ Worth ₹ 1,400/- Medicines

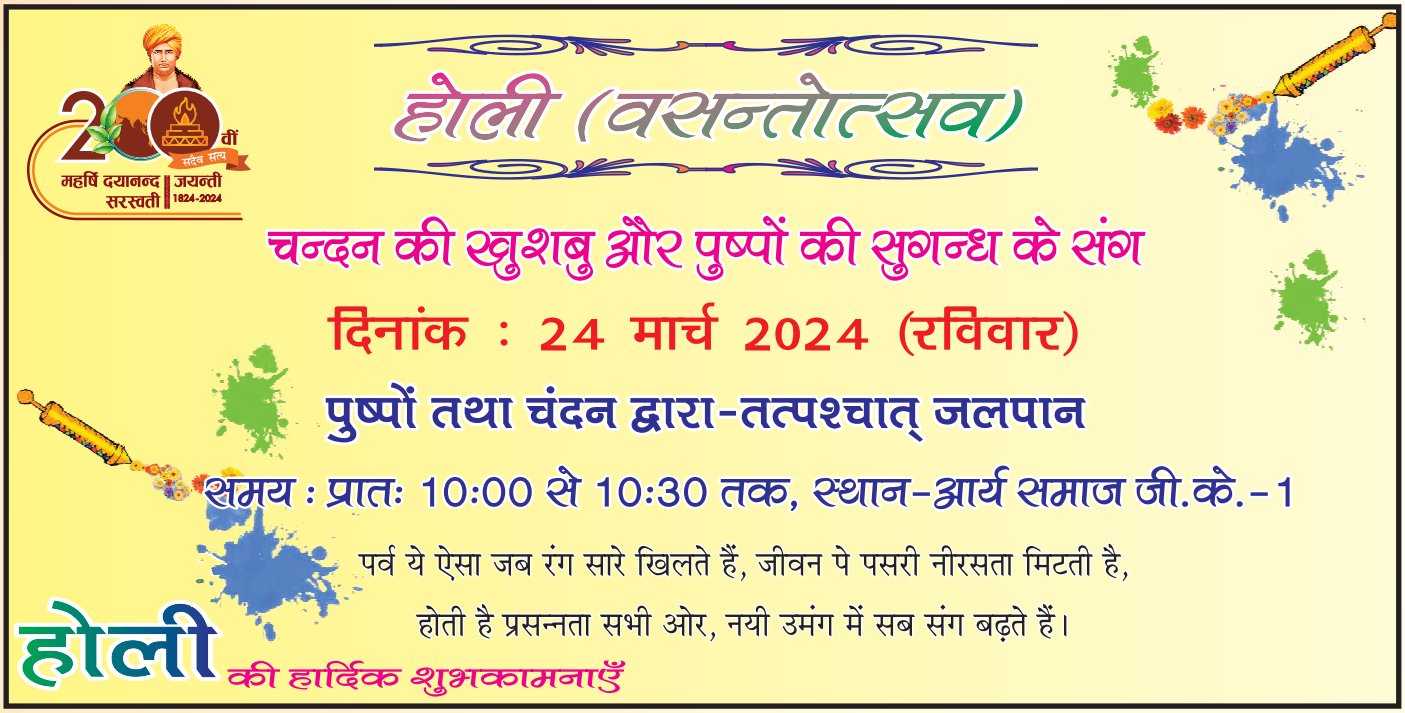

आर्य समाज महिला सत्संग - माघ मास यज्ञ की पूर्णाहुति

प्रतिवर्ष की भाँति आर्य समाज महिला सत्संग द्वारा संचालित माघ मासीय यज्ञ का आयोजन गत 15 जनवरी 2024 से प्रारम्भ कर 15 फरवरी 2024 को सम्पन्न किया गया अथर्ववेद के मंत्रों द्वारा निरंतर चलने वाले इस यज्ञ में महिलाओं ने श्रद्धा व उत्साह पूर्वक भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी ने प्रतिदिन वेदोपदेश द्वारा सभी श्रोताओं व यजमानों को यज्ञ, वेद, धर्म व अध्यात्म की शिक्षाएँ प्रदान की।

पूर्णाहुति के अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती अंजु महरोत्रा, प्रधानाचार्या, कालका पब्लिक स्कूल ने की तथा डॉ. महेश विद्यालंकार जी व डॉ. पुनीता शर्मा जी के प्रवचनों से श्रोता लाभान्वित हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती मृदुला चौहान, उपप्रधाना, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के रूप उपस्थित हुईं। श्रीमती शशि प्रभा आर्य तथा श्रीमती रचना आहूजा द्वारा भी आशीर्वचन व शुभ कामनाएँ प्रदान किये गये। इस समापन समारोह में आस पास की सभी समाजों से भी महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज महिला सत्संग की मंत्राणी श्रीमती रेनू चौधरी द्वारा किया गया तथा अंत में सभी अतिथि व आगंतुको का आभार प्रधाना श्रीमती उषा मरवाह द्वारा किया गया।

45वाँ वार्षिकोत्सव - अमृत पॉल आर्य शिशु शाला

अमृत पॉल आर्य शिशु शाला (आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1) 45वाँ वार्षिकोत्सव- अमृत पॉल आर्य शिशु शाला का 45वाँ वार्षिकोत्सव **शुक्रवार, 23 फरवरी 2024** को भव्य तरीके से मनाया गया। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती अनिता नौडियाल, उप-निदेशक (शिक्षा), एम.सी.डी. थीं। श्री योगेश मुंजाल जी, हमारे संरक्षक, की अध्यक्षता में वार्षिकोत्सव धूम-धाम से मनाया गया। लगभग 300 लोग उपस्थित हुए।

न्याय मंच ट्रस्ट का प्रांतीय सम्मेलन अगामी **रविवार, 11 फरवरी, 2024** को प्रात: 9:30 बजे से सांय 5:00 बजे तक आर्यसमाज के बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र आडिटोरियम, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

लक्ष्य: - देश में पौरूषपूरण समाज का निर्माण

वक्ता गण :- श्री यति नृसिन्हानंद, श्री पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ, सुश्री अंबर जैदी, सरदार राजीव सिंह, श्री मक्खन लाल, डॉ. राजीव मिश्रा, श्री विवेक भटनागर, डॉ. कुलदीप दत्ता, श्री अजीत सिंह 'दद्दा', श्री ओमेंद्र रत्नू, Ex मुस्लिम श्री सिद्धार्थ समीर, श्री कौशलेश राय, श्री राकेश गौड़, श्री सर्वेश मित्तल, श्री विनोद आजाद, श्री लाला माथुर। **संचालन:** - तुफैल चतुर्वेदी जी के द्वारा हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग 400 लोगों उपस्थित हुए। कार्यक्रम के पश्चात् भोजन की व्यवस्था कि गई थी।